वर्ष 6, अंक 10

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

मई 2023

₹65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

स्क्रीन के उस पार

ज़माना जुबली का

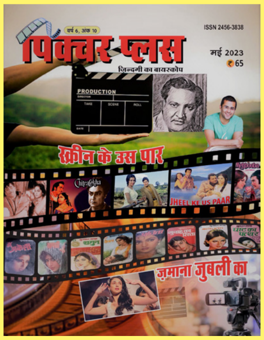

ISSN 2356 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस

वर्ष-6,अंक-10, मई, 2023

मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक

संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग

कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन

जाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन

शाश्वती

पंजीकृत पता

37/ए, तीसरी मंजिल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल (www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - 9313677771
Email:Pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(चित्र इंटरनेट से साभार व सभी पद अवैतनिक)

अनुक्रम

05 संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी - सिनेमा नहीं सिखाता...
06 एकमात्र सत्यजित रे... : ऋत्विक कुमार घटक
10 अरविंद कुमार : 'माधुरी' के वे दिन - 'चित्रलेखा' का वो न्यूड सीन !
13 दीपक डोबरियाल : "हमें कंटेंट से समझौता करने की आदत है"
16 प्रहलाद अग्रवाल : सिल्वर स्क्रीन और लुगदी साहित्य की लोकप्रियता
18 गौतम सिद्धार्थ : फिल्ममेकर को चाहिए ब्लॉकबस्टर ड्रामा, बस !
20 यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : गुलशन नंदा का एक स्पेशल इंटरव्यू
23 इंद्रजीत सिंह : 'वल्गैरिटी' को ये लोग 'एंटरटेमन्मेंट वैल्यू' कहते हैं,
27 तेजेन्द्र शर्मा : हिंदी के लेखक बदलने को तैयार नहीं रहते
28 वीर विनोद छाबड़ा : कहां गई वो चवन्नी क्लास जमात!
29 Interval Plus : Lights Camera Action
33 पिक्चर प्रसाद : 'भाईजान' किसी का न हुआ!
34 संगम पांडेय : लैला मजनूं : इमोशन के साथ राग और लय
36 दीप भट्ट : ना मैं भगवान हूं, ना मैं शैतान हूं (संदर्भ : सुनील दत्त)
42 विनोद तिवारी : फिल्म पत्रकारिता, भाग-3
44 प्रताप सिंह : बदलते 'सिनेमा समय' में एक सिने पारखी की याद!
47 विमल मिश्र : जीएम बंगलोज की शान निराली (पिक्चर पॉइंट)
48 मनमोहन चड्ढ़ा : फिल्मकार छंदिता मुखर्जी को श्रद्धांजलि

50 संजीव श्रीवास्तव : 'जुबली' सीरीज का किरदार जमशेद खान कौन है?
52 कल्पना कुमारी : 'रॉय टाकीज' क्या वाकई 'बॉम्बे टाकीज' है?
53 पिक्चर प्रश्न : 10
54 मनोज मोहन : 'शब्द सारथी अरविंद कुमार' (शुभ समाचार)
56 Avjit Ghosh : Panna Parda Baja -
58 अनुपम ओझा : गीतकार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित। संपादक - संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

पत्रिका पढ़कर कोई भी दीवाना हो जाए !

पत्रिका जितनी मेरी कल्पना में थी उस से कहीं ज्यादा हृदयग्राही और सम्पन्न है। आप फिल्म कला के प्रेमियों और पारखियों को एक मंच पर लाने में समर्थ हुए हैं यह एक बड़ी उपलब्धि है। आज के युग में जब सुधि पाठकों का अभाव है, फिल्म पत्रकारिता के प्रति एक सुनिश्चित ध्येय लेकर चलने का आपका साहस प्रशंसनीय है। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप जो लक्ष्य ले कर साधन कर रहे उसमें आपको अपार सफलता मिले।

मुझे लगता है कि पाठकों के एक बड़े वर्ग को यह पता नहीं होगा कि इतनी साफ सुथरी और इतनी स्तरीय फिल्म पत्रिका बाजार में उपलब्ध है। मैं जानता हूं कि प्रचार का व्यय कितना ज्यादा आता है लेकिन उस ओर कुछ प्रयत्न किया जा सके तो परिणाम सुखद हो सकते हैं क्योंकि इतनी अच्छी पत्रिका एक बार हाथ में आने के बाद पाठक उसका दीवाना हुए बिना नहीं रह सकता।

आपको और आपके साथ जो भी लोग इस महा यज्ञ में जुटे हुए हैं उन सबको बधाई।

-विनोद तिवारी, पुणे

एक दिन 'माधुरी' की तरह होगी चर्चित

हमारी प्रिय मासिक पत्रिका 'पिक्चर प्लस' का नवीनतम अंक देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। छठे व सातवें दशक में टाइम्स आफ इंडिया व हिन्दुस्तान टाइम्स के साथ-साथ अन्य कई पत्रिकाओं में फिल्मी पृष्ठों का विशेष स्थान था, जिससे सिने प्रेमियों को कलाकारों व फिल्मों की नई-नई जानकारियां मिलती रहती थी, लेकिन अब यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे समय में आपकी पत्रिका ने हम जैसे कई पाठकों पर यह अंक प्रकाशित कर बड़ा उपकार किया है।

आज की 'पिक्चर प्लस' शीघ्र ही कल की 'माधुरी' व 'फिल्मफेयर' का स्थान ले लेगी, ऐसी आशा है। इसके लिए सम्पादकीय विभाग को विशेष हार्दिक बधाई...।

-चन्द्र प्रकाश माथुर "चन्द्र",
आनासागर, अजमेर

बदलाव अच्छे लगे

'पिक्चर प्लस' का अप्रैल अंक मिल गया था। पहले के मुकाबले कुछ बदलाव देखने को मिले। यह अच्छा लगा। धीरे-धीरे इसी तरह प्रगति पथ पर आगे बढ़ें। यही हमारी कामना है। हमारी शुभकामनाएं।

-प्रहलाद अग्रवाल, सतना

ऑस्करनामा पर अनोखा अंक

'पिक्चर प्लस' का अप्रैल 2023 अंक वाकई ऑस्करनामा के रूप में विषय विशेष पर केन्द्रित दिलचस्प सामग्री अपने साथ समेटकर लाया। ऑस्कर अवॉर्ड से जुड़े विभिन्न मुद्दों की सटीक पड़ताल एक फिल्म पत्रिका के गंभीर विमर्श के उद्देश्यों की कसौटी पर खरी उतरनेवाली है। राजामौली को लेकर रामगोपाल वर्मा की बेबाक अभिव्यक्ति और मकरंद देशपांडे द्वारा उन्हें एपिक का मास्टर निरूपित किया जाना उतना ही खरा है, जितना मुजफ्फर अली की यह साफगोई कि ऑस्कर में भारत के पिछड़ने की मूल वजह हमारे फिल्म जगत की संकीर्ण मानसिकता और उसका टोटल सिस्टम है। सौरभ शुक्ला की इस दलील में भी दम है कि ऑस्कर ने कभी नहीं कहा कि उसने पूरी दुनिया का ठेका ले रखा है, बल्कि बेस्ट फॉरेन फिल्म का एक सेक्शन भर होता है वहां। ऑस्कर अवॉर्ड के अब तक के सफर और चयन प्रक्रिया से रूबरू कराने वाले जयनारायण प्रसाद और गौतम सिद्धार्थ के आलेख भी स्तरीय हैं।

इसके अलावा सिनेमानामा में आधी हकीकत आधा फसाना बयां करते हुए कृष्ण कुमार शर्मा ने भारतीय सिनेमा के इतिहास पर प्रकाशित पुस्तकों का समग्र विश्लेषण किया है। विकास कुमार और विजय कुमार तिवारी की सिनेमा पर केन्द्रित पुस्तक समीक्षाएं भी पढ़ने लायक हैं। 'माधुरी' के पूर्व संपादक विनोद तिवारी की कलम से फिल्मों के रसास्वादन की पहल स्वागत योग्य है।

-विनोद नागर, भोपाल

सिनेमा की बेहतरीन पत्रिका

फिल्म और रंगमंच के बारे में पढ़ना मेरी अभिरुचियों में शामिल है। संजीव श्रीवास्तव द्वारा संपादित 'पिक्चर प्लस' विगत 6 सालों से प्रकाशित की जा रही है। मैं भी इसका पाठक हूं। अप्रैल 2023 का अंक मुझे प्राप्त हुआ है। यह एक पठनीय अंक है। संजीव जी खुद गंभीर फ़िल्म-समीक्षक हैं। फिल्म पत्रकारिता पर यह एक बेहतरीन मासिक पत्रिका है। जिस का स्वागत किया जाना चाहिए।

-प्रबोध उनियाल, ऋषिकेश

सिनेमा नहीं सिखाता...

सिनेमा हमेशा से मोहब्बत भरे पैगाम का माध्यम रहा है। सिनेमा नफ़रत फैलाने का औजार कभी नहीं रहा। लेकिन हाल की कुछेक फिल्मों से हमारी यह धारणा टूटती है। किसी भी प्रदर्शनकारी कला का मकसद मनोरंजन के माध्यम से समाज में ज्ञानवर्धन के स्रोत का विकास तथा शांति के साथ भाईचारा को स्थापित करना ही रहा है। प्रदर्शनकारी कला एक तरह से समाज में पब्लिक ब्रॉडकास्टर की भूमिका निभाती है। निष्पक्षता और संतुलन इसके प्रमुख तत्व होते हैं। चूंकि वह अधिकतम समुदाय से सीधा जुड़ता है। लिहाजा उसके सामुदायिक दायित्व का दायरा विस्तृत होता है।

सच दिखाना साहत की बात है। उसका स्वागत होना चाहिए। लेकिन कोई भी सामाजिक–राजनीतिक या सांप्रदायिक घटना पूरे क्षेत्र को प्रभावित करती है। पूरी मानव जाति उसकी चपेट में आती है। इसके चित्रण के समय इसका भी ख्याल रखा जाना चाहिए। हमारी किसी भी प्रदर्शनकारी कला से कौन कहां जुड़ रहा है, इसका हमें कोई अनुमान नहीं होता। ऐसे में उसके एकांगी होने से उसका कौन सा पक्ष किस समुदाय की भावना को ठेस पहुंचा दे, इसका कोई अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। सामुदायिकता निहित होने के नाते ही हमारे सिनेमा में शुरू से समाज के सभी तबके की खुशी और मनोरंजन के लिए आवश्यक प्रसंग दिये जाते रहे हैं।

कोई भी फिल्मकार केवल एक पक्ष या समुदाय की पीड़ा या संवेदना को दिखाकर हरदिलअजीज कभी नहीं हो सकता। जबकि फिल्मों वाले तो हरदिलअजीज होने के लिए विख्यात है। इसी तरह जब कोई फिल्म बनकर केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पास रिलीज के लिए जाती है तो वहां भी इस पक्ष को मजबूती के साथ देखा जाता है कि फलां फिल्म पूरे समाज पर क्या प्रभाव डाल सकती है, उसके हिसाब से 'कट' या 'श्रेणी' देने का फैसला होता है। किंतु आश्चर्य है पिछले कुछ समय की कई बड़ी और चर्चित फिल्मों को देखें तो ऐसा कत्तई नहीं लगता। सिनेमा को धीरे-धीरे नफ़रत फैलाने का औजार बनाया जाने लगा है। सिनेमा को सोशल मीडिया पर वायरल किये गये वीडियो पोस्ट होने से बचाइए, जहां बातें बेलगाम कही जाती हैं।

गंभीर साहित्य के इतर गैर-साहित्यिक कृतियों पर बना सिनेमा हमारी फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा खुराक रहा है। हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता में इन 'पल्प लिटरेचर' का बड़ा योगदान रहा है, जिसे आम भाषा में 'लुगदी' कहा जाता है। इससे हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की गाड़ी आगे बढ़ी है। ये पुस्तकें आम लोगों की संवेदनाओं, मनोआकांक्षाओं, सपनों से जुड़ी थीं, लिहाजा इन पर आधारित फिल्में सिल्वर जुबली होती रही हैं। अब सिल्वर जुबली का ज़माना एक सपना हो गया है। अब तो ज़माना 'जुबली' जैसी वेब सीरीज का है, जहां हिंदी फिल्म उद्योग की बुनियाद को इतने हल्केपन से भी वर्णित किया जा सकता है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इसे देखने से ऐसा लगता है हमारे सिनेमा जगत के दिग्गजों में सिनेमा का कोई जुनून ही नहीं था। वह केवल बड़े स्कैंडलबाज थे या कि षडयंत्रकारी। इन रस्साकशियों के बीच वे फिल्में भी बनाते गये। इस स्थापना ने भी सिनेमा को लेकर हमारी मजबूत धारणा को धक्का पहुंचाया है।

मित्रो, 'पिक्चर प्लस' सिनेमा की पत्रिका है। इसे समय की धड़कन के साथ जोड़े रखना हमारी पत्रकारिता का मानदंड है। ताजा अंक आपको कैसा लगा, इस पर अपनी प्रतिक्रिया जरूर दें और सुझाव भी। हम धीरे-धीरे कई तरह के बदलाव कर रहे हैं। आने वाले समय में इसका पूर्ण स्वरूप दिखाई देगा।

सादर।

आपका संपादक

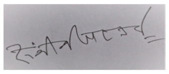

-संजीव श्रीवास्तव